

कोई भी राजनीतिक दल जो कहता है, करता है उसी से पहचाना जाता है कि वह देश के साथ है किसी दूसरे देश के साथ है। किसी को बतानी नहीं पड़ती कि देश का हित कौन चाहता है और कौन देश का हित नहीं चाहता है। सब जान जाते हैं, पहचान जाते हैं कि देश के लिए जरूरी कौन है और देश के लिए खतरा कौन हैं जिनता चुनाव में बता देती है कि किसको वह देश के लिए जरूरी समझती है और किसको वह देश के लिए जरूरी नहीं समझती है। वर्तमान में आतंकवाद व आतंकवादियों को लेकर भारत व पाकिस्तान के बीच तनाव की स्थिति में है। ऐसे में देश के राजनीतिक दलों को देश व देश की सरकार के साथ रहना चाहिए और सरकार के हर काम का पूरा समर्थन करना चाहिए। 22 अप्रैल से 7 मई तक कई बार ऐसा नहीं लगा कि देश के कई राजनीतिक दल सरकार के साथ नहीं हैं, वह सरकार के साथ होते तो इंतजार करते सरकार क्या करने जा रही है और उसका समर्थन करते। 7 मई को जब भारत ने पाकिस्तान के आंतकियों के टिकानों पर हमला किया और उसके सबूत पेश किए तो देश के राजनीतिक दलों ने सरकार की कार्रवाई की समर्थन जरूरी किया पर यह समर्थन उनको मजबूरी में करना पड़ा क्योंकि उस वक्त यदि वह सरकार का विरोध करते तो देश के लोगों को उसी वक्त समझ आ जाता कि ये राजनीतिक दल

देश के साथ नहीं है, सरकार के साथ नहीं है। कुछ दिन मजबूरी में देश के राजनीतिक दलों को सरकार के साथ खड़ा होना पड़ा, सरकार का समर्थन करना पड़ा इसलिए उन्होंने कोई सवाल नहीं किया, कोई राजनीति नहीं की। लेकिन यह तो हो नहीं सकता था कि विपक्ष के दल और मोदी सरकार के खिलाफ राजनीति न करें। वह मौके का इंतजार कर रहे थे। उनको मौका मिला जब पाकिस्तान के कहने पर भारत ने सैन्य कार्रवाई रोक दी। सबको मालूम है कि पाकिस्तान ने इसके लिए पहल की, भारत ने सहमति जताई इस शर्त के साथ कि पाकिस्तान की तरफ से कुछ भी किया गया तो सैन्य कार्रवाई की जाएगी। देश के राजनीतिक दलों को मौका अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यह मौका दिया। ट्रंप को कहने की कोई जरूरत नहीं थी, वह जानते थे कि इसे भारत पसंद नहीं करेगा। लेकिन युद्धविराम का श्रेय लेने के लोभ के चलते ट्रंप ने कह दिया कि उनके कहने पर पाकिस्तान व भारत ने सैन्य कार्रवाई रोकी है। कांग्रेस सहित राजनीतिक दलों ने इसी को मुद्दा बना लिया कि मोदी सरकार ने ट्रंप के कहने पर या उनके दबाव में आकर सैन्य कार्रवाई रोक दी है। बाद में ट्रंप ने कहा भी कि सैन्य कार्रवाई उन्होंने नहीं रुकवाई है, उन्होंने सिर्फ मदद की है। लेकिन तब तो कांग्रेस के सरकार का खिलाफ मुद्दा मिल गया था और उसने देश भर में उसे

संपादकीय

बुद्ध भूमाया कि मोदी सरकार ने ट्रंप के कहने पर सैन्य कार्यवाई रोक कर देश का अपमान किया है, देश की सैन्य नीति के खिलाफ काम किया है। कांग्रेस ने कहा

जो चीन चाहता है
वही करते हैं

नहीं कि भारत को और कुछ दिन युद्ध करना था, जीवोंके लेने के बाद ही युध्य रोकना था। कई लोग चाहते थे कि इतनी जल्दी युद्ध नहीं रोकना था। इसमें तो भारत को कुछ हासिल नहीं हुआ। हकीकत में भारत जानता था कि युद्ध ज्यादा लंबा खींचा तो चीन इसका कायदा उठाएगा और भारत को लंबे समय तक युद्ध में उलझा देगा। यानी चीन चाहता था कि पाकिस्तान नैं सैन्य करिवाई शुरू कर दी है तो वह जल्द खत्म नहीं होनी चाहिए। लैंकिन भारत ने तीन दिन में पाकिस्तान को बुरी तरह नुकसान पहुंचा दिया। यानी पाकिस्तान की हालत नड़ते की नहीं रह गई थी, चीन के हथियार उसके केसी काम नहीं आए। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान के

भारत के सामने सरेंडर करने के अलावा कोई भारा नहीं था, पाकिस्तान ने सरेंडर कर दिया। चीन को ह बात पसंद नहीं कि पाकिस्तान ने अमरीका के दबाव से भारत के सामने झुक गया। इसलिए उसने पाकिस्तान के दबाव डालकर युद्ध विराम तुड़वाया और अमरीका ने बताया कि पाकिस्तान पर चीन का प्रभाव अमरीका को ज्यादा है। मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि अमरीका युद्ध जितनी जल्दी बंद हो जाए बंद करना चाहता था, ताकि उसको एशिया क्षेत्र में शांति बनाए रखने का श्रेय मिल सके।

चीन चाहता था कि भारत व पाकिस्तान युद्ध लंबा रहे ताकि भारत की पूरी ताकत उसमें लग जाए और

ह अर्थिक तौर पर कमज़ोर हो जाए और उसके लिए प्रश्न स्तर पर कोई चुनौती न पेश कर सके। पाकिस्तान के तीन दिन में घुटनों पर आ जाने से इशिया नेट्र में भारत की सैन्य ताकत की श्रेष्ठता अपने आप बाबित हो गई। पाकिस्तान ने चीनी, अमररकी व तुर्की के धियार भारत के खिलाफ प्रयोग किए और भारत को यादा नुकसान न पहुंचा सका। जबकि भारत ने कुछ विदेशी व ज्यादातर स्वदेशी हथियारों से पाकिस्तान को तीन दिन में भारी नुकसान पहुंचाया और इसके सबूत भी निया को दिखाए। इससे चीनी हथियारों की श्रेष्ठता पर वालिय निशान लग गया, उसकी मांग विश्व के देशों

1467

'विकास' उड़ गया आधी मे



एकप्रेसवे के छाटे से नवनिर्मित हिस्से जैसी परियोजनाओं का भी वे स्वयं उद्घाटन करते हैं बल्कि ऐसे अवसरों पर प्रयः कांग्रेस की सरकार को कोसने और अपनी पीठ थपथपाने से भी नहीं चूकते। मिसाल के तौर पर गत वर्ष द्वारका एक्सप्रेसवे के उद्घाटन के समय प्रधानमंत्री ने तंज करते हुये कहा था कि “कांग्रेस ने 7 दशक तक जो गढ़दे खोदे थे वे अब तेजी से भरे जा रहे हैं। उसी

क क्रियाव नबा करान लत्र म एक निर्माणाधीन मकान की दीवार गिर गई जिसमें दब जाने से 3 लोगों की मौत हो गई और 3 लोग घायल हो गये। जबकि कई जगहों पर पेड़ उखड़ने का भी समाचार है। परन्तु शायद इस आधी का सबसे अधिक प्रकारों न्यू अशोक नगर रैपिड मेट्रो स्टेशन को झेलना पड़ा। दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ रैपिड रेलवे ट्रॉजिट सिस्टम के बीच आने वाले इस स्टेशन के एक बड़े हिस्से की छत ही तेज हवा के चलाते उड़ गई। और छत की कई टीन नीचे सड़क पर जा गिरी तो कई हवा में लटकने लगीं। गौर तलब है कि अभी क्रीब चार माह पूर्व ही 5 जनवरी को प्रधानमंत्री नंदें रम्दी द्वारा दिल्ली-मेरठ रैपिड रेलवे ट्रॉजिट सिस्टम के 13 किलोमीटर लंबे जिस सेक्षण का उद्घाटन किया था, न्यू अशोक नगर स्टेशन भी उसी सेक्षण के बीच आने वाला एक प्रमुख स्टेशन है। और यह नवनिर्मित स्टेशन आंधी-तूफान का एक झटका भी नहीं झेल पाया। दिल्ली के न्यू अशोक नगर को उत्तर प्रदेश के साहिबाबाद से जोड़ने वाली इस परियोजना में 4,600 करोड़ रुपये की लागत आई है। न्यू अशोक नगर रैपिड मेट्रो स्टेशन पर हुये इस हादसे के बाद सुरक्षा के दृष्टिगत नमों भारत ट्रेन की सेवाओं के आवागमन को अगले आदेश तक स्थगित करना पड़ा था। इस हादसे के बाद एक बार फिर स्टेशन की छत के निर्माण की गुणवत्ता पर प्रश्न उठने लगे हैं।

यहाँ एक बात यह भी क्रांतिले नहीं हरने केवल प्रधानमंत्री नई ट्रेन को झ़ंडी दिखा

कॉलेजों में पढ़ाई के समय मेहनत न करना-बहुत से छात्रों को कॉलेज में दखिला मिल जाता है, लेकिन वे पढ़ाई में सही मेहनत नहीं करते। उनका ध्यान पढ़ाई से ज्यादा मजे करने, पार्टीयों और अन्य गतिविधियों में होता है। ऐसे में उनका समय बर्बाद हो जाता है और वे अपनी शिक्षा में फेल हो जाते हैं। जब वह नौकरी की तलाश करते हैं, तो वे महसूस करते हैं कि उनके पास कोई कौशल या ज्ञान नहीं है, जो उन्हें नौकरी पाने में मदद कर सके।

वुद है, न कि सरकार
पैसा आदि। लेकिन जब लोग ज्यादा हो जाते हैं और संसाधन उतने ही रहते हैं, तो ज़ाहिर है कि कई लोगों को उनका हक्क नहीं मिल पाता। इसका सीधा असर बेरोजगारी पर पड़ता है। क्योंकि हर नौकरी के लिए सैकड़ों लोग लाइन में होते हैं, और उनमें से बहुत कम को ही काम मिल पाता है। बाकी लाग या तो खाली बैठ जाते हैं या फिर किसी छोटे-मोटे काम में लग जाते हैं जिससे उनके सपने पूरे नहीं हो पाते।

उद्घाटिता की तरफ ज्यादा झुकाव-

A wide-angle photograph of a large group of people, predominantly men, gathered outdoors. They are dressed in a variety of traditional Indian clothing, including dhotis, lungis, and shawls. The group is diverse in age and ethnicity. Some individuals are holding cameras or phones, suggesting they might be tourists or participants in a public event. The background shows a simple, light-colored wall.



बेरोजगारी

दबाव- हमारे समाज में अक्सर यह देखा जाता है कि माता-पिता अपने बच्चों से विशेष क्षेत्रों में करियर बनाने की उम्मीद करते हैं, जैसे डॉक्टर, इंजीनियर या सरकारी अफसर बनाना। इस समाजिक दबाव के कारण बहुत से बच्चे अपनी इच्छा के विपरीत वह क्षेत्र चुनते हैं, जो उन्हें पसंद नहीं होता। अंत में, वे न तो उस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर पाते हैं और और न ही अपने मन की शांति पा पाते हैं।

बढ़ती जनसंख्या- भारत में हर साल जनसंख्या बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। जितने लोग देश में बढ़ रहे हैं, उतने रोजगार के मौके नहीं बन आये हैं। जब देश की जनसंख्या बहुत ज्यादा हो जाती है, तो सभी लोगों को नौकरी देना मुश्किल हो जाता है। हर किसी को पढ़ाई, नौकरी, और अच्छी जिन्नती जिने के लिए समर्पण जागिरा देते हैं।

ज्यादा जोर दिया गया है और यह सही भी है। उद्यमिता बहुत बड़ा हथियार है बेरोजगारी के विरुद्ध, पर उद्यमिता के लिए आर्थिक रूप से सक्षम होना बहुत जरूरी है। उद्यमिता के अपने कुछ दुष्परिणाम भी हैं जैसे- आर्थिक अस्थिरता, मानसिक दबाव, संसाधनों की कमी, बड़ी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा आदि है। आजकल के युवाओं में उद्यमिता की ओर बढ़ावा देखा जा रहा है जो एक आत्मनिर्भरता का भ्रम है। यहां हमें सोचना होगा कि उद्यमिता एक अच्छी सोच है पर बेरोजगारी को कम करने के लिए उपयुक्त नहीं। बेरोजगारी को हमें खुद ही कम करना होगा अपनी कार्य शैली, ज्ञान और सही फैसला लेकर। "इंसान की अपनी सोच और मेहनत ही उसके भविष्य को निर्धारित करती है" सरकार के बल गमना दिला

भारत के बौद्धिक तथा समग्र विकास के लिए युवाओं की बड़ी भूमिका

三



अवसर होते रहना चाहिए। किसी भी राष्ट्र को बड़ा बनाने या समृद्ध बनाने के लिए वर्षों की मेहनत अथक प्रयास और सकारात्मक सोच के साथ संयम एवं उच्च मनोबल की आवश्यकता होती है, तब जाकर ही राष्ट्र एक नज़बूत तथा विकासवान राष्ट्र बन पाता है।

यह सकारात्मक सोच का ही परिणाम है भारत ने कोविड-19 के संक्रमण में जैसे

है। 140 करोड़ का जनसंख्या वाले देश में युवा जनसंख्या का प्रतिशत बहुत ज्यादा है, अन्तर्भुक्त आने वाले भविष्य में देश की बागडोरे इन्हीं युवा हाथों में होने वाली है। एक बहुत अच्छी कहावत है कि "आशाओं पर आकाश टिका दुआ है" और निसंदेह आशा, उम्मीद, संभावना बहुत ही सारांगीत एवं चमत्कारिक शब्द भी हैं। उम्मीद जो इतिहास में कई बार चमत्कार करती आई है। यह आशा एवं उम्मीद का ही प्रतिफल है कि हम सकारात्मक होकर उच्च मनोबल के साथ किसी लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ते हैं। फिर यदि लक्ष्य मोड़कल साइंस में केसी नई दवा को इजाद करना हो या स्पेस परिसर में नई टेक्नोलॉजी लाना हो या देश में वेकास की नई धारा को प्रवाहित करना हो, तो सकारात्मक ऊर्जा हमें इस संदर्भ में मदद करने वाला तत्व होता है। अच्छी और सही सोच हमेशा अच्छे परिणाम देने वाला होती है, पर बिना सकारात्मक सोच के और बिना केसी सार्थक परिणाम की कल्पना किए हुए उस पर पसीना बहाना बड़ा ही दुष्कर कार्य प्रतीत होता है। अच्छे पर आशा अच्छे अन्त विशाल जनसंख्या वाले देश में उस पर प्रभाव नियंत्रण किया एवं उस पर विजय प्राप्त की है यह आसान काम नहीं था किंतु पूरे देश के नागरिकों एवं अग्रिम नेताओं की सकारात्मक सोच तैयारी एवं संसाधनों के समुचित प्रयोग से ही संभव हो पाया। आज हमारे सामने समाज में जो भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं, वे कर्भ चुनौतियों के सामने झुके नहीं और ना ही उन्हें किसी प्रकार की समाजिक कठिनाई अथवा चुनौती झुका पाई और यही कारण है की वह हमारे प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। इस संदर्भ में हमें व्यक्ति को सकारात्मक सोच रख कर अपने मौजूदा संसाधनों का संपूर्ण दोहन कर सटीक नीति और भविष्य की योजनाएं बनाकर उस पर मेहनत करनी होगी और मेहनत से उपजें आत्मबल तथा संयम के साथ किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संपूर्ण ऊर्जा समेकित रूप से केंद्रित कर उस लक्ष्य की प्राप्ति करने वाले संसाधनों का विश्लेषण तथा अवलोकन कर उसकी क्षमता का आकलन करना होगा। केवल हवा में सकारात्मक सोच और मनोबल के द्वारा किसी बड़े लक्ष्य को पान नहीं

